ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

त्याग व बलिदान का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान

चंद्रपाल जांदू

सहायक आचार्य, इतिहास, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

भारतीय सेना के गौरवशाली इतिहास के बारे में चर्चा करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। भारतीय सेना का इतिहास विशिष्ट, उच्च स्तर का और गौरवशाली रहा है। भारतीय सेना की शौर्य गाथाएं किसी भी भारतीय का सीना गर्व से भर देती है। भारतीय सैनिकों के शौर्य, साहस, पराक्रम और बलिदान की गाथाएं सदियों से गाई जाती रही हैं। यह गाथाएं इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है। शौर्य और साहस के अलावा भारतीय सेना सैन्य धर्म और चरित्रगत आचरण के लिए भी जानी जाती है। देश की रक्षा में हर पल तैनात रहने वाली भारतीय सेना ने अपने पराक्रम के 70 साल पूरे कर लिए हैं। इसी साल 15 जनवरी को सेना ने 70वां सेना दिवस मनाया। हर साल 15 जनवरी को सेना दिवस मनाया जाता है। देश को आजादी मिलने के बाद सेना का भारतीयकरण हुआ। इससे पहले यह ब्रिटिश भारतीय सेना के रूप में मौजूद थी। स्वतंत्रा के बाद राष्ट्रीय सेना के रूप में इसका भारत की सीमाओं की रक्षा के प्रति उनका विधिवत समर्पण सुनिश्चित हुआ। सेना ने अपनी हर जिम्मेदारी को जान की बाजी लगाकर निभाया है। बारहवीं शताब्दी से लेकर अब तक, फिर चाहे वह पृथ्वीराज चौहान, राजा पोरस, राणा सांगा, महाराणा प्रताप या शिवाजी के नेतृत्व में लड़ी हो अथवा प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सेना के झंडे तले या आजादी के उसने चीन व पाकिस्तान के साथ युद्ध लड़ा हो, भारतीय सेना का इतिहास सैन्य दृष्टिकोण से बेहतरीन और गौरवपूर्ण रहा है।

परिचय

सेना ने अपने पराक्रम से दुश्मनों को परास्त कर दिया। आजादी के लगभग तुरंत बाद से ही भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव पैदा हो गया था और दोनों देशों के बीच पहले तीन पूर्ण पैमाने पर हुये युद्ध के बाद राजसी राज्य कश्मीर का विभाजन कर दिया गया। प्रथम कश्मीर युद्ध 1947 में और दूसरा कश्मीर का युद्ध 1965 में लड़ा गया।1948 में हैदराबाद का विलय करने में सेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोवा दमन और दीव का विलय 1961 में सेना द्वारा किया गया। 1962 में भारत-चीन युद्ध हुआ। भारतीय सेना ने संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में योगदान दिया। 1999 में कारगिल युद्ध लड़ा गया। इन युद्धों में हमारी सेना ने अपनी बहादुरी के परचम गाड़े हैं।लोकसभा के आंकड़ों के अनुसार पिछले दो सालों के दौरान दुश्मनों से लड़ते हुए भारतीय सेना के 150 जवान शहीद हुए और साल 2015 में 85 सैनिक शहीद हो गए। पाकिस्तान सीमा पार से लगातार फायरिंग कर युद्ध विराम का उल्लंघन कर रहा है। पिछले साल दोनों देशों के बीच 971 बार और 2016 में 449 बार युद्धविराम का उल्लंघन हुआ है। बार-बार दुश्मन देश की नापाक हरकत के मद्देनजर सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक किया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सीमा के अंदर जाकर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया। जिसमें सात आतंकी शिविरों को नष्ट करने के साथ ही 38 आतंकियों को मारा गया। इसी के मद्देनजर जम्मू कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन ऑलआउट चल रहा है। पिछले साल 214 आतंकी मारे गए और इस साल अब तक 70 आतंकियों को मार गिराया गया है। आतंकियों के शीर्ष कमांडर भी मारे जा चुके हैं। भारतीय सेना ने आजादी के ठीक बाद ही 1948 में पाकिस्तान से युद्ध लड़ा था। इसके बाद साल 1965, साल 1971, सियाचिन और साल 1999 में कारगिल में पाकिस्तान को हराया। लेकिन बावजूद इसके पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आता।[1]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

भारतीय सीमा में आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने की बात हो या फिर चोरी-छुपे परमाणु हथियार बनाना। पाकिस्तान हमेशा भारत के लिए समस्या खड़ी करने से जुटा रहता है। लेकिन भारतीय सेना ने वो ताकत अर्जित कर ली है कि वो पाकिस्तान को हमेशा मुंहतोड़ जबाव दे सकता है। 70 वर्षों से संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान बहुपक्षवाद और अंतरराष्ट्रीय एकजुटता का, संगठन के उच्च आदर्शों की अभिव्यक्ति का प्रकाशपुंज रहा है। सियरा लियोन से लेकर कंबोडिया तक और तिमोर लेस्ते, नामीबिया, अल सल्वाडोर से लेकर विश्व के अनेक देशों में संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों ने अमन का संदेश दिया है। शांति, सुरक्षा और समृद्धि के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सबसे बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश का नाम है संयुक्त राष्ट्र शांति सेना।

शांति सेना के अभूतपूर्व अभियान में भारत की भागीदारी का कोई सानी नहीं है। 1950 से भारत के 2,00,000 सैन्यकर्मियों ने शांति सेना की अनेक मुहिम में अपना योगदान दिया है। किसी देश द्वारा इतनी बड़ी संख्या में सैन्य सहायता प्रदान करने की यह अपनी अनूठी मिसाल है। किसी भी अन्य देश के मुकाबले सैनिकों की यह संख्या सर्वाधिक है। इससे न केवल विश्व में शांति और सौहार्द कायम करने की भारत की गहरी प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है, बल्कि यह भी साबित होता है कि वह संयुक्त राष्ट्र अधिकारपत्र पर कितना विश्वास करता है।संयुक्त राष्ट्र शांति सेना का गौरवपूर्ण इतिहास लगभग 70 वर्ष पुराना है। 1950 में शांति सेना की स्थापना के बाद भारतीय सेना ने कोरिया युद्ध के दौरान पहली बार शांति अभियान में हिस्सा लिया। 1950-1954 के बीच चले इस युद्ध में शांति सेना में भारतीय मेडिकल कॉर्प्स भी शामिल थे। तत्पश्चात भारत ने 50 से अधिक अभियानों में हिस्सा लिया और उसके 168 सैनिकों ने दिलेरी का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। संयुक्त राष्ट्र के सबसे खतरनाक और चुनौतीपूर्ण मिशन्स, जैसे दक्षिणी सूडान, कांगो, माली, मध्य अफ्रीकी गणराज्य और विश्व के दस अन्य मिशन्स में भारतीय शांति सैनिकों ने अपनी बहादुरी का लोहा मनवाया। संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में भारत ने अपने जांबाज कमांडरों को भेजा है और यह परंपरा अब भी जारी है। और जैसे कि शांति सैनिकों की मांग लगातार बढ़ रही है (वर्तमान में उनकी तैनाती सर्वाधिक है), भारत संयुक्त राष्ट्र से अपने संबंधों को मजबूत करते हुए सैनिकों को बड़ी संख्या में मिशन्स पर भेज रहा है। विश्व के लिहाज से देखा जाए तो जून 2018 में शांति सेना में भारत का तीसरा सबसे अधिक सैन्य योगदान था। दुनिया के अलग-अलग देशों में भारत के 6,000 से अधिक सैन्यकर्मी सेवारत हैं और मानव जीवन की रक्षा में तत्पर हैं।आइए जानें कि पिछले 70 वर्षों में भारतीय सैनिक किस प्रकार संयुक्त राष्ट्र शांति सेना का आधार रहे हैं।[2]

विचार-विमर्श

कोरिया (1950-54): कोरिया युद्ध के दौरान भारत ने 60वीं इंडियन फील्ड एंबुलेंस तैनात की थी। यह 17 अधिकारियों, नौ जूनियर कमीशन्ड अधिकारियों (जेसीओ) और विभिन्न पदों वाले 300 अन्य सैनिकों वाली पैरामेडिकल यूनिट थी। इसका कार्य मुख्य रूप से युद्ध में घायल और बीमार होने वाले सैनिकों को वापस लाना और उनकी सेवा करना था। 10 मार्च, 1955 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने इस सैन्य टुकड़ी को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया था। अब तक राष्ट्रपति ट्रॉफी से सम्मानित होने वाला यह एकमात्र मिशन है। लेफ्टिनेंट जनरल के.एस.थिमाया को संयुक्त राष्ट्र द्वारा गठित तटस्थ राष्ट्र प्रत्यर्पण आयोग (एनएनआरसी) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। भारत ने मेजर जनरल एस.पी.पी.थोराट के नेतृत्व में 231 अधिकारियों, 203 जेसीओ और विभिन्न पदों वाले 5,696 सैनिकों का अभिरक्षक बल (कस्टोडियन फोर्स) भी प्रदान किया।

भारत-चीन (1954-70): भारत ने वियतनाम, कंबोडिया और लाओस के संकट के दौरान पैदल सेना की एक बटालियन और सहायक कर्मचारी प्रदान किए। इनके कार्यों में युद्धविराम की निगरानी करना और युद्ध बंदियों की वापसी शामिल थी। इस अभियान में कुल 970 अधिकारी, 140 जेसीओ और विभिन्न पदों वाले 6,157 सैनिक तैनात थे।

पश्चिम एशिया (1956-67): भारत संयुक्त राष्ट्र आपात बल (यूएनईएफ) का भी हिस्सा रहा है। 1956 में अरब-इज़राइल युद्ध के बाद सुरक्षा परिषद द्वारा गाजा पट्टी और सिनाई प्रायद्वीप में सशस्त्र सैन्य दस्तों का पहली बार प्रयोग किया गया था। नवंबर 1956 से मई 1967 के दौरान भारत ने इन क्षेत्रों में पैदल सेना की एक टुकड़ी तैनात की और अन्य सहयोग प्रदान किए। इन 11

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

वर्षों के दौरान पश्चिम एशिया के इस मिशन में भारतीय सेना के 393 अधिकारियों, 409 जेसीओ और विभिन्न पदों वाले 12,383 सैनिकों ने हिस्सा लिया। इसकी सफलता के कारण सुरक्षा परिषद ने 1960 में कांगो के सैन्य हस्तक्षेप के अनुरोध को स्वीकार कर लिया ताकि बेल्जियम से आजादी के बाद कांगो में अमन-चैन बरकरार रखा जा सके।

मिशन ओनक, कांगो (1960-63) : 1960 में भारत के राजदूत राजेश्वर दयाल को कांगो में महासचिव के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया। इस मिशन का उद्देश्य कांगो संकट को राजनीतिक रूप से शांत करना था। भारतीय वायुसेना के छह लाइट बॉम्बर्स की सहायता से 467 अधिकारियों, 401 जेसीओ और 11,354 अन्य सैनिकों ने ऐसी जंगी कार्यवाही को अंजाम दिया, जिसे संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के बेहद खतरनाक अभियानों में शुमार किया जाता है। इस सैन्य अभियान ने कांगो की एकता को सुनिश्चित किया पर भारत के लिए यह अभियान अत्यधिक पीड़ादायी रहा। इसमें भारत ने अपने 39 पराक्रमी सैनिकों को गंवाया। किसी भी संयुक्त राष्ट्र अभियान में भारत के हताहत सैनिकों की यह सबसे बड़ी संख्या है। इस अभियान में शहीद भारतीय कैप्टन गुरबचन सिंह सालरिया को परमवीर चक्र से नवाजा गया। इस पदक से सम्मानित होने वाले वह पहले और एकमात्र शांति सैनिक हैं। दक्षिण कांगो के काटांगा में दुश्मनों से लोहा लेते समय उन्होंने अपने प्राण गंवाए थे।[3]
भारतीय सेना के मेजर जनरल इंद्रजीत रिखे, जो गाजा में संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन सेना के चीफ ऑफ स्टाफ थे, को कांगो अभियान के लिए महासचिव डैग हैमरस्जोल्ड का सैन्य सलाहकार नियुक्त किया गया। इसके बाद वह महासचिव यू थांट के भी सलाहकार रहे।

1964 में साइप्रस में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के अभियान में तीन भारतीय फोर्स कमांडरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई : लेफ्टिनेंट जनरल प्रेम सिंह ज्ञानी, जनरल कोडंडेरा सुबैय्या थिमाया और मेजर जनरल दीवान प्रेम चंद। जनरल थिमाया भारतीय सेना के सबसे विभूषित (डेकोरेटेड) अधिकारियों में से एक थे और उन्हें कोरिया में अपने सैन्य योगदान के लिए पद्मभूषण से नवाजा गया था (यह देश का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है)।1989 में मेजर जनरल (प्रकारांतर में लेफ्टिनेंट जनरल) प्रेम चंद को नामीबिया में फोर्स कमांडर के तौर पर तैनात किया गया। वह नामीबिया की आजादी के ऐतिहासिक दौर के गवाह भी रहे। मार्च 1992 से मार्च 1993 के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल सतीश नांबियार यूगोस्लाविया में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा बल के कमांडर रहे। उन्होंने शांति स्थापना आयोग के 'खतरों, चुनौतियों और परिवर्तन के उच्च स्तरीय पैनल' के लिए भी कार्य किया है।

मिशन अंटैक, कंबोडिया (1992-93): कंबोडिया में युद्धविराम के पर्यवेक्षण, लड़ाकों को निहत्था करने, शरणार्थियों के प्रत्यर्पण और स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की निगरानी करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संक्रमणकालीन प्राधिकरण- यूएनटीएसी- को स्थापित किया गया था। भारतीय सेना के कुल 1,373 सैन्य कर्मियों ने इसमें भाग लिया था।

मिशन यूनोमोज़, मोज़ाम्बिक (1992-94): जब 1994 में मोज़ाम्बिक में संयुक्त राष्ट्र अभियान (ओनूमोज़) समाप्त हुआ, तो व्यापक स्तर पर इसे शांति स्थापना की एक सफल कहानी के रूप में देखा गया। इस अभियान ने केवल दो वर्षों में अपना लक्ष्य पूर्ण किया, हालांकि इसका शासनादेश काफी जटिल था। युद्ध विराम पर निगरानी रखने और उसकी पुष्टि करने के अतिरिक्त इस अभियान को सशस्त्र बलों के पृथक्करण और केंद्रीकरण, उनके सैन्यविघटन पर भी नजर रखनी थी। इस बात की निगरानी भी करनी थी कि हथियार जमा करके नष्ट किए जाएं। इस दो वर्षीय अभियान के बाद मोज़ाम्बिक में लंबे समय से चल रहा गृह युद्ध समाप्त हुआ और लोकतांत्रिक चुनावो का रास्ता साफ हुआ। इस अभियान में 1,083 शांति सैनिकों ने भाग लिया जिनमें इंजीनियर, लॉजिस्टिक सहयोग देने वाले कर्मचारी, स्टाफ अधिकारी और सैन्य पर्यवेक्षक शामिल थे।

मिशन यूनोसोम II, सोमालिया (1993-94): सोमालिया में संयुक्त राष्ट्र अभियान (यूनोसोम) में भारतीय नौसेना और थलसेना ने सक्रिय भूमिका निभाई। विभिन्न पदों वाले 5,000 सैन्यकर्मियों और नौसेना के चार युद्धपोतों ने इस अभियान में हिस्सा लिया। इन मिशन्स में भारतीय सैन्यकर्मियों ने खतरनाक परिस्थितियों में उल्लेखनीय सहनशीलता का प्रदर्शन किया। भारत उन कुछ देशों

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

में से एक था, जिसने इस अभियान के अंत तक सोमालिया में डटे रहने का वादा निभाया, हालांकि उस पर वापस लौटने का राजनैतिक दबाव बराबर पड़ रहा था।

मिशन यूनामिर, रवांडा (1994-96): रवांडा में संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन (यूनामिर) में लगभग 1,000 भारतीय सैन्यकर्मियों ने दिसंबर 1995 से मार्च 1996 तक हिस्सा लिया। इस दौरान कुल 956 सैन्यकर्मियों को रवांडा में तैनात किया गया जिनमें एक पैदल टुकड़ी, एक सिग्नल और इंजीनियर कंपनी, स्टाफ कर्मचारी और सैन्य पर्यवेक्षक शामिल थे। इस अभियान में भारतीय सेना के ब्रिगेडियर शिव कुमार संयुक्त राष्ट्र सेना के तीसरे और अंतिम फोर्स कमांडर थे। इस नरसंहार में लगभग दस लाख लोगों ने अपनी जानें गवाईं। फिर भी भारत के निर्भीक सैनिक मिशन के अंत तक रवांडा में मुस्तैद रहे, हालांकि कई देशों ने अपने सैनिकों की वापसी की बात दोहराई थी।[4]

मिशन यूनावेम, अंगोला (1989-99): संयुक्त राष्ट्र अंगोला सत्यापन मिशन (यूनावेम) का कार्य देश में विदेशी सैन्यबलों की वापसी का पर्यवेक्षण करना और चुनावों का निरीक्षण था। भारत ने इस मिशन के विभिन्न चरणों में भी प्रशंसनीय भूमिका निभाई। अंगोला में संयुक्त राष्ट्र के पहले मिशन में भारत के एक उप फोर्स कमांडर और कुल 1,014 सैन्यकर्मियों वाली पैदल सेना की एक टुकड़ी और एक इंजीनियर कंपनी ने हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त इसी मिशन में भारत के 10 सैन्य पर्यवेक्षकों ने सतर्क निगरानी का काम किया। अंगोला के दूसरे और तीसरे मिशन में भी भारत ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। दूसरे मिशन में भारत के 25 सैन्य पर्यवेक्षक सेवारत रहे तो तीसरे मिशन में 20 सैन्य पर्यवेक्षकों, 37 एसओ और 30 वरिष्ठ एनसीओ ने महती योगदान दिया।

मिशन यूनामसिल, सियरा लियोन (1999-2001): सियरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र सहायता मिशन (यूनामसिल) में भारत प्रारंभ से ही (1999) शामिल था। इस मिशन में भारत की पैदल सेना की दो टुकड़ियों, दो इंजीनियर कंपनियों, एक क्विक रिएक्शन कंपनी, एक लड़ाकू हेलीकॉप्टर यूनिट, चिकित्सा यूनिट्स और लॉजिस्टिक सहयोग देने वाले कर्मचारियों, क्षेत्रीय मुख्यालय एवं फोर्स मुख्यालय के कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। साथ ही भारतीय 9 पैरा (विशेष बल) के लड़ाकों ने खतरों से खेलते हुए एक कमांडो ऑपरेशन में संयुक्त राष्ट्र सेना की बंधक बना ली गई टुकड़ी को छुड़ाने का काम किया।

मिशन यूनामी, इथियोपिया-एरीट्रिया (2006-08): इथियोपिया और एरिट्रिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन (यूनामी) के तहत 2000-2008 के दौरान भारत की पैदल सेना की एक टुकड़ी, एक कंस्ट्रक्शन इंजीनियर कंपनी और एक फोर्स रिजर्व कंपनी ने हिस्सा लिया।

यूनोसी, आइवरी कोस्ट (2004-17): 2004 में कोत दिव्वार में संयुक्त राष्ट्र अभियान (यूनोसी) की शुरुआत से भारत के सैन्यकर्मियों और सैन्य पर्यवेक्षकों ने अहम भूमिका निभाई, जोकि 2017 में मिशन के अंत तक जारी रहा। सतत शांति और स्थिरता एवं आर्थिक समृद्धि की दिशा में कोत दिव्वार की प्रगति यूनोसी की उल्लेखनीय वापसी से प्रदर्शित होती है।

यूनामिल, लाइबेरिया (2007-18): लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन ने 30 मार्च 2018 को सफलतापूर्वक अपना जनादेश पूरा कर लिया। यहां भारतीय फॉर्म्ड पुलिस के महिला एवं पुरुष बल तैनात थे। लाइबेरिया की महिलाओं के लिए प्रेरणा बनीं महिला एफपीयू ने फरवरी 2016 में वापसी की। साथ ही दुनिया भर में ऐसी अन्य महिला एफपीयू के लिए उदाहरण पेश किया।

देश की वो वीरांगनाएं, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में मोर्चा संभाला

भारत वीर सपूतों की धरती है और यहां आजादी की लड़ाई में कई वीरांगनाओं ने भी अपना बलिदान दिया था। इसकी मिट्टी से होनहार, बहादुर सुत भी पैदा हुए हैं और सुता भी। भारत तकरीबन एक सदी तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। इस गुलामी की बेड़ियों को काटने के लिए हिंदुस्तान की वीरांगनाओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

1857 के पहले स्वातंत्र्य समर से लेकर 1947 में देश आजाद होने तक ये महिलाएं डटी रहीं और जब आजाद भारत की अपनी लोकतांत्रिक सरकार बनी उस वक्त भी नए भारत के नींव निर्माण में उन्होंने अपना शत प्रतिशत योगदान दिया। आज हम बात करेंगे उन्हीं वीरांगनाओं की, जिनके बलिदान और देश-निर्माण में योगदान के लिए हम सदा उनके ऋणी रहेंगे

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा

रानी चेन्नम्मा उन भारतीय शासकों में से हैं जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए सबसे पहली लड़ाई लड़ी थी। 1857 के विद्रोह से 33 साल पहले ही दक्षिण के राज्य कर्नाटक में शस्त्रों से लैस सेना के साथ रानी ने अंग्रेजों से लड़ाई की और वीरगति को प्राप्त हुईं। आज भी उन्हें कर्नाटक की सबसे बहादुर महिला के नाम से याद किया जाता है।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

भारत में जब भी महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा ज़रूर होती है। आपने शायद ही किसी ऐसे भारतीय के बारे में सुना होगा जो झांसी की रानी के बहादुरी भरे कारनामे सुनते-सुनते न बड़ा हुआ हो। झांसी की रानी सन 1857 के विद्रोह में शामिल रहने वाली प्रमुख शख्सियत थीं। रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य से चकित अंग्रेजों ने भी उनकी प्रशंसा की थी और वह अपनी वीरता के किस्सों को लेकर किंवदंती बन चुकी हैं।

बेगम हजरत महल

बेगम हजरत महल 1857 के विद्रोह के सबसे प्रतिष्ठित चेहरों में से एक हैं। बेगम हजरत महल की हिम्मत का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उन्होंने मटियाबुर्ज में जंगे-आज़ादी के दौरान नजरबंद किए गए वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी। उन्होंने लखनऊ पर कब्ज़ा किया और अपने बेटे को अवध का राजा घोषित किया। इतिहासकार ताराचंद लिखते हैं कि बेगम खुद हाथी पर चढ़ कर लड़ाई के मैदान में फ़ौज का हौसला बढ़ाती थीं।[5]

ऐनी बेसेंट

थियोसोफिकल सोसाइटी और भारतीय होम रूल आंदोलन में अपनी विशिष्ट भागीदारी निभाने वाली ऐनी बेसेंट का जन्म 1 अक्टूबर, 1847 को तत्कालीन यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड के लंदन शहर में हुआ था। भारत आने के बाद भी ऐनी बेसेंट महिला अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। महिलाओं को वोट जैसे अधिकारों की मांग करते हुए ऐनी बेसेंट लागातार ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखती रहीं। भारत में रहते हुए ऐनी बेसेंट ने स्वराज के लिए चल रहे होम रूल आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भीकाजी कामा

भीकाजी कामा को उनके प्रेरक और क्रांतिकारी भाषणों के लिए तथा भारत और विदेश दोनों में लैंगिक समानता की वकालत करने के लिए जाना जाता है। एक वरिष्ठ नेता की तरह इन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। 22 अगस्त 1907, स्टटगार्ट, जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट सम्मेलन में, कामा ने ध्वज फहराया जिसे उन्होंने आजादी का प्रथम ध्वज कहा।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

सुचेता कृपलानी

भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल रहने वाली सुचेता गांधीजी के करीबियों में से एक थीं। उस दौरान वे कई भारतीय महिलाओं के लिए रोल मॉडल रहीं और स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने के लिए उन्हें प्रेरित करने में सफल रहीं। इन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान स्वतंत्रता संग्राम में तथा 1946-47 में विभाजन के दंगों के दौरान सांप्रदायिक तनाव शमन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय संविधान सभा में 'वंदे मातरम' भी गाया था।

सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू कई महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। 'भारत कोकिला' के नाम से प्रख्यात श्रीमती नायडू ने एक उत्साही स्वतंत्रता कार्यकर्ता और एक कवि के रूप में सन 1930-34 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया था। श्रीमती नायडू 1905 में स्वतंत्र भारत की पहली महिला गवर्नर बनी। इनकी अंग्रेजी में कविताओं के संग्रह आज भी महत्वपूर्ण भारतीय लेखन में मिलते है।

अरुणा आसफ अली

कांग्रेस पार्टी की सक्रिय सदस्य रह चुकीं अरुणा आसफ अली न सिर्फ देख की स्वतंत्रता के लिए लड़ीं बल्कि तिहाड़ जेल के राजनैतिक कैदियों के अधिकारों की लड़ाई भी लड़ी। उन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया और लोगों को अपने साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनकी लड़ाई के जज़्बे के चलते उन्हें कैद कर लिया गया था। लेकिन उन्हें जेल की दीवारें भी अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ने से नहीं रोक पाई और उन्होंने वहां रह कर कैदियों की स्थिति को सुधारने के लिए तिहाड़ जेल के अंदर ही विरोध प्रदर्शन व हड़तालें की, जिसके कारण ही तिहाड़ के कैदियों की हालत में सुधार आया।[6]

कमला नेहरू

कमला विवाह के बाद जब इलाहाबाद आईं तो एक सामान्य कम उम्र की नई नवेली दुल्हन भर थीं लेकिन समय आने पर यही शांत स्वाभाव की महिला लौह स्त्रीव साबित हुई, जो धरने-जुलूस में अंग्रेजों का सामना करती, भूख हड़ताल करती और जेल की पथरीली धरती पर सोती थीं। नेहरू के साथ-साथ कमला नेहरू और फ़िर इंदिरा की प्रेरणाओं में देश की आज़ादी ही सर्वोपरि थी. कमला नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने पति जवाहरलाल नेहरू का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर शिरकत की थी।

डॉ. लक्ष्मी सहगल

पेशे से डॉक्टर लक्ष्मी सहगल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर प्रमुख भूमिका निभाई थी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की अटूट अनुयायी के तौर पर वे इंडियन नेशनल आर्मी में शामिल हुईं थीं। उन्हें वर्ष 1998 में पद्म विभूषण से नवाजा गया था।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

दुर्गा बाई देशमुख

दुर्गा बाई देशमुख महात्मा गांधी के विचारों से बेहद प्रभावित थीं। उन्होंने महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया व भारत की आजादी में एक वकील, समाजिक कार्यकर्ता, और एक राजनेता की सक्रिय भूमिका निभाई।

परिणाम

लेबनान (यूनिफिल) (दिसंबर 1998 से): लेबनान में भारत के 892 शांति सैनिक, पैदल सेना की एक बटालियन और लेवल II अस्पताल अब तक अपनी सक्रिय भूमिका निभा चुके हैं। सीरिया में संकट के कारण लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (यूनिफिल) की वर्तमान स्थिति तनावग्रस्त और अस्थिर है।

मोन्यूक/मोनुस्को, विस्तारित अध्याय VII जनादेश, कांगो (जनवरी 2005 से): भारत ने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र संगठन स्थिरीकरण मिशन (मोनुस्को) के तहत कार्य किया है। यहां भारत की पैदल सेना की चार बटालियन, स्तर III का एक अस्पताल और दो फॉर्म्ड पुलिस बल तैनात हैं। इसमें सीमा सुरक्षा बल और भारत-तिब्बती सीमा पुलिस के अर्धसैनिक बल भी शामिल हैं, जोकि 2009 से कांगो में मौजूद हैं। भारत के लेफ्टिनेंट जनरल चंदर प्रकाश ने 2010 से 2013 तक इस मिशन के फोर्स कमांडर के तौर पर कार्य किया। अफ्रीकी संघ की इंटरवेंशन ब्रिगेड के साथ मोनुस्को का नया जनादेश संकल्प 2098 (2013) लागू किया गया है। यह ब्रिगेड संयुक्त राष्ट्र कमान के तहत तैनात है।[7]

यूएनमिस/यूएनमिस्स, सूडान (अप्रैल 2005 से): सूडान में संयुक्त राष्ट्र मिशन (यूएनमिस) और दक्षिणी सूडान में संयुक्त राष्ट्र मिशन (यूएनमिस्स) में 2005 से भारतीय बलों ने सक्रिय भूमिका निभाई है। यहां पैदल सेना की दो टुकड़ियां और लेवल II का एक अस्पताल तैनात हैं, जबकि लेफ्टिनेंट जनरल जसबीर सिंह लिडर ने जनवरी 2006 से मई 2008 के बीच फोर्स कमांडर के तौर पर अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। जुलाई 2011 में यूनमिस ने जिस दिन अपने छह वर्ष तक चले अभियान को समाप्त किया, उसी दिन दक्षिणी सूडान ने अपनी आजादी की घोषणा की। नए देश को समर्थन देने के लिए सुरक्षा परिषद ने एक परवर्ती मिशन- यूएनमिस्स को स्थापित किया जिसमें लेफ्टिनेंट जनरल लिडर महासचिव के उप विशेष प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किए गए।

यूएनडोफ, गोलान पहाड़ी (फरवरी 2006 से): इज़राइल और सीरिया की सेना के बीच युद्धविराम को बरकरार रखने और दोनों देशों के बीच 1974 के निर्वासन समझौते के कार्यान्वयन पर निगरानी रखने के लिए फरवरी 2006 से भारतीय शांति सैनिक गोलन पहाड़ियों पर तैनात हैं। संयुक्त राष्ट्र निर्वासन पर्यवेक्षक बल (यूएनडोफ) को लॉजिस्टिक सुरक्षा देने के लिए 190 कर्मियों की एक बटालियन को तैनात किया गया है। 2012 से 2015 तक भारत के मेजर जनरल इकबाल सिंह सिंघे गोलन में फोर्स कमांडर थे। इसके बाद 2016 में मेजर जनरल जय शंकर मेनन ने कमान संभाली और सितंबर 2017 तक अपनी सेवाएं दीं। 'ए' लाइन के साथ मिशन ने अपना स्थान बदला और अब कैंप ज़ियाउनाई में भारतीय सैन्य बल तैनात है।

मिनुस्ताह/मिनुजुस्थ, हैती (दिसंबर 1997 से): हैती में संयुक्त राष्ट्र स्थिरता मिशन (मिनुस्ताह) और हैती में संयुक्त राष्ट्र कानूनी सहयोग मिशन (मिनुजुस्थ) के प्रारंभ से भारतीय सैन्यकर्मियों ने बढ़-चढ़कर इसमें योगदान दिया। यहां भारत के तीन फॉर्म्ड पुलिस बल अत्यंत सफल रहे। अप्रैल 2017 में संयुक्त परिषद ने संकल्प 2350 (2017) में निर्णय लिया कि 15 अक्टूबर, 2017 को मिनुस्ताह को विराम दे दिया जाए। तत्पश्चात इस मिशन को एक छोटे अनुवर्ती शांति स्थापना मिशन में तब्दील कर दिया जाएगा जोकि कानूनों का प्रवर्तन करने वाले संगठनों को मजबूती देने में सरकारी प्रयासों का समर्थन करेंगे, हैती राष्ट्रीय पुलिस को विकसित करेंगे और मानवाधिकारों की निगरानी, रिपोर्टिंग और विश्लेषण में संलग्न होंगे।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

गुमनाम सेनानियों की सूची

भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले गुमनाम सेनानियों की सूची एक के बाद एक नीचे निम्नलिखित रुप से दी गई है।

उल्लास्कर दत्ताः इन्होंने भारत की स्वतंत्रता में मुख्य भूमिका निभाई थी। इसके साथ ही अलीपुर बम मामले में भी इन्होंने अपना जबरदस्त योगदान देश की सेवा में दिया था। भारत की स्वतंत्रता में कई आंदोलनों में भी इन्होंने भाग लिया था। उसके पश्चात अलीगढ़ बम मामले की वजह से इन्हें 2 मई 1908 को गिरफ्तार कर दिया गया था। गिरफ्तार करने की कुछ ही महीनों बाद इनको फांसी की सजा सुना दी गई। लेकिन दया याचिका अपील करने के बाद में इनके फांसी की सजा को डालकर आजीवन कारावास में भेजने की सजा सुनाई। उसके पश्चात इन्हें अंडमान सेल्यूलर जेल में भेज दिया गया था।

ननीबाला देवीः ननी बाला देवी को भारत के बहुत कम लोग जानते हैं। लेकिन ननी बाला देवी भारत की स्वतंत्रता सेनानी थी। इन्होंने अंग्रेजो के खिलाफ लड़ने वाले और अंग्रेजो के खिलाफ आंदोलन करने वाले लोगों का बहुत समर्थन किया था।

दुकारी बाला देवी: इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ खुलेआम लड़ाइयां लड़ी। साथ ही साथ भारत की सशस्त्र स्वतंत्रता सेनानियों की मुखिया भी रह चुकी है, उन्होंने स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजो के खिलाफ कई आंदोलन में भाग लिया है। लेकिन कुख्यात आर्म्स एक्ट के तहत इन को दोषी ठहराते हुए गिरफ्तार कर दिया। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में गिरफ्तार होने वाली पहली फाइटर महिला के रूप में भी इनको जाना जाता है।[8]

सतीश चंद्र सामंतः इनका नाम भी भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की सूची नहीं आता है। इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए कई आंदोलनों में भाग लिया। स्वतंत्रता के पश्चात यह 1952 से लेकर 1977 तक लोकसभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

पुनिल बिहारी दासः पुनील बिहारी दास जो भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ ढाका अनुशीलन समिति के संस्थापक और अध्यक्ष भी रह चुके थे। इन्होंने अंग्रेजो के खिलाफ भारत के क्रांतिकारी में मुख्य रूप से योगदान दिया और कई आंदोलनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई थी।

पीर अली खानः पीर अली खान जो भारत के शुरुआती विद्रोहियों में से एक थे। जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपनी जी जान लगा दी थी और भारत में होने वाले स्वतंत्रता आंदोलनों के मुख्य हिस्सा भी रहे हैं। लेकिन फिर भी इनके बारे में आज तक किसी को भी पता नहीं है। इनको 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में गिरफ्तार करके 14 विद्रोहियों के साथ खुलेआम में फांसी पर लटका दिया गया था।

मातंगिनी हाजराः इन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए भारत छोड़ो आंदोलन और असहयोग आंदोलन में भी मुख्य रूप से भाग लिया था। मातंगिनी हाजरा जो पूरी तरह से गांधीवादी रूप से भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए तत्पर थे और कई आंदोलन में सक्रिय रूप से रूचि भी रखते थे। 1932 में इन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

भारत को आजादी दिलाने के लिए जिन-जिन योद्धाओं ने अपना त्याग और बलिदान देकर देश को आजादी दिलाई, उनमें से कुछ नामों के बारे में आपको बताने जा रहे हैं।

भारत को आजादी दिलाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण योग्यदान

महात्मा गांधी: भारत को आजादी दिलाने के लिए महात्मा गांधी का बहुत महत्वपूर्ण योग्यदान रहा। भारत मे अंग्रेजी शासन काल के सबसे प्रमुख नेता के रूप में महात्मा गांधी रहे।

बाल गंगाधर तिलक: बाल गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, पत्रकार, समाजसुधारक, वकील और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख कार्यकर्ता रहे। इसके साथ ये भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पहले नेता के रूप में भी जाने जाते थे। ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें "भारतीय अशांति का जनक" कहा।[7]

शहीद भगतसिंह: भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे प्रभावशाली क्रांतिकारियों में एक माना गया था। भगत सिंह एक बहुत बड़े समाजवादी थे। लोग आज उनको शहीद भगतसिंह के रूप में जानते हैं। क्योंकि उन्हीने मरते दम तक अंग्रेजों को मुंहतोड़ जवाब दिया। उनको 23 वर्ष की आयु में फांसी दे दी गयी थी। उनके इस बलिदान से भारत मे को भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ाई शुरू करने के लिए प्रेरित किया और वे आधुनिक भारत में एक युवा मूर्ति बन गए।

जवाहर लाल नेहरू: भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में जवाहर लाल नेहरू ने शपथ ली और 20वीं शताब्दी में भारतीय राजनीति में एक केंद्रीय व्यक्ति जवाहर लाल थे। वह महात्मा गांधी के संरक्षण के तहत भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे ऊपर नेता के रूप में उभरे थे और 1947 से उनकी मृत्यु तक एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत पर प्रधानमंत्री के रूप में शासन किया। वो जीवनकाल के दौरान पंडित नेहरू के रूप में लोकप्रिय थे। उनको बच्चे बहुत पसंद थे, इसलिए बच्चे उन्हें प्यार से "चाचा नेहरू" के नाम से जानते थे।

डॉ भीमराव आंबेडकर: भीमराव अंबेडकर एक भारतीय अर्थशास्त्री राजनीतिक और समाज सुधारक के रूप में लोग इन्हें जानते हैं। इन्होंने दलितों, महिलाओं, श्रमिको के खिलाफ समाज मे हो रहे भेदभाव के खिलाफ एक अभियान चलाया। साथ ही भीमराव अंबेडकर ने भारत में न्याय व्यवस्था को भी सही किया। भारत सविधान के नियम भी इन्होंने ही बनाये। अपने शुरुआती कैरियर में वो एक अर्थशास्त्री प्रोफेसर और वकील भी रहे। इसके बाद उन्होंने अपने जीवन में राजनीतिक गतिविधियों की तरफ ध्यान दिया, वहां उन्होंने दलितों के लिए उनके राजनीतिक अधिकार और सामाजिक स्वतंत्रता के लिए वकालत की। आज इनको बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता हैं।

चन्द्रशेखर आजाद: चंद्रशेखर आजाद आजादी के आंदोलन में सोशलिस्ट आर्मी से भी जुड़े थे। राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में 1925 के काकोरी कांड में भी भाग लिया और पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर वहां से भाग निकले। इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में उन्होंने समाजवादी क्रांति का आह्वान किया। उनका यह कहना था कि अगर वह ब्रिटिश सरकार के आगे वो कभी घुटने नहीं टेकेगें। 27 फरवरी 1931 को इसी संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने इलाहाबाद के इसी बाग में खुद को गोली मार के अपने प्राण भारत माता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

सुभाष चंद्र बोस: सुभाष चंद्र बोस ने द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजो के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उन्हें आज सभी नेताजी के नाम से भी जानते हैं। सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के एक बड़े नेता थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद सेना का भी निर्माण भी किया था।[6]

निष्कर्ष

बहुत से ऐसे स्वतंत्रता सेनानी भी थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए भारतमाता के चरणों में समर्पित कर दिया। इस दौरान उन्हें बहुत बार जेल भी जाना पड़ा और अंग्रेजी सेनाओं के बहुत जुल्म भी सहने पड़े।इसके दौरान बहुत से स्वतंत्रता सेनानियों को तो फांसी भी दे दी गई। लेकिन उन सबका एक ही लक्ष्य था – भारत को आजाद कराना और आखिरकार अंत मे वह इसमें सफल हो गए। ऐसे महान सेनानियों को हमारा शत शत प्रणाम।[8]

संदर्भ

1) आजादी की कहानी, 2001
2) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित तथ्य, 2011
3) ऐसे आयी आजादी, 1999
4) लोक चेतना में स्वाधीनता की लय - आकांक्षा यादव, 1995
5) स्वाधीनता आन्दोलन और नारी चेतना शक्ति, 2006
6) आजादी के आन्दोलन में भी अग्रणी रही नारी (विश्व महिला दिवस पर), 2000
7) Women in the Indian national movement (Google book By Suruchi Thapar-Björkert), 1996
8) स्वाधीनता सेनानी लेख-पत्रकार (गूगल पुस्तक ; लेखिका - आशारानी वोरा), 1990